Lectur No:-27 (1)

TOPIC.

(1) Syadvada.

Dr. Sunita Kumari
Dept. of Philosophy
B.A Part-I Paper-(S)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur.

Ans. → जैन दर्शन के अनुसार वस्तुओं के अनन्त धर्म होते हैं। अनन्त धर्मकम् वस्तु। हम किसी भी वस्तु के जितने गुणों या लक्षणों को जानते हैं, उतने ही गुणों या लक्षण उस वस्तु में नहीं होते। वस्तु के अनन्त धर्मों को जानना हमारे लिए संभव संभव नहीं है।

यह जैनों का अनेकांतवाद है।

अतः - चूंकि हम वस्तु के अनन्त धर्म को नहीं जान सकते हैं, अतः यह कहा जा सकता है कि वस्तु को हम सही-सही नहीं जानते हैं।

अतः वस्तुओं के विषय में हमारा ज्ञान एकांगी है। यहाँ जैनदर्शन का स्याद्वाद हमारी सहायता करता है।

स्याद्वाद कहलाता है कि हम किसीपर

P.T.O.

रूप से नही कह सकते है। या नही। स्याद्वाद जैनदर्शन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण अंग है।

इसकी धारणा है कि सत् का स्वरूप अत्यधिक अनियत है। 'स्यात' शब्द संस्कृत की 'अस' धातु (होना) की

विधिलिंग का एक रूप है। इसका अर्थ है :- हो सकता है। शायद। इसलिए स्याद्वाद शायद का सिद्धांत है।

इस सिद्धान्त का तात्पर्य है कि वस्तु को अनेक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है और प्रत्येक दृष्टिकोण से एक भिन्न निष्कर्ष प्राप्त करता है।

किसी भी वस्तु के सम्बन्ध मे हमारा जो निर्णय होता है, वह सभी दृष्टियों से सत्य नही होता है। साधारणतः सिद्धान्त को भूल जाते है और अपने विचारों को सर्वथा सत्य (मानते) मानने लगते है। इस एक महत्वपूर्ण उदाहरण के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

वह: अंधे हाथी के आकार का ज्ञान जानने के उद्देश्य से हाथी के अंगो को स्पर्श करते हैं।

कोई उसका पेट, कोई पैर, कोई, कान, कोई पूँछ तथा कोई सूँड पकड़ता है।

प्रत्येक अंधा सोचता है कि उसी का ज्ञान सब कुछ है। शेष गलत है। किन्तु जैसे सूँड पकड़ा है। प्रत्येक अन्धा सोचता है कि उसी का ज्ञान सब कुछ है। शेष गलत है।

परन्तु जैसे ही उन्हें गलत विश्वास दिलाया जाता है कि प्रत्येक के ने हाथी का एक अंग स्पर्श किया है, उनका मतभेद दूर हो जाता है।

नया एक दृष्टिकोण है। जिसके आधार पर हम किसी वह पदार्थ के विषय में कोई कथा करते हैं।

स्याद्वाद के व संबंध में दो तरह के मत देखने को मिलते हैं। पहला मत उपनिषद का था कि सात ही तत्व है। दूसरा मत छान्दोपनिषद का किन्तु अस्वीकृत सा था।

—— ⊙ ——